ISSN: 3048-9423(Online)
Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS)
© NIJMS | Vol. 1 | Issue 4 | February-March 2025
Available online at: https://nijms.com/
DOI: https://doi.org/10.71126/nijms.v1i4.47

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति

अभिषेक शर्मा [1] एवं डॉ. देवेंद्र कुमार यादव [2]

[1]एम. ए, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

[2]सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

[1]*Corresponding Author Email id:* abhik2one@gmail.com

[2]*Email id:* yadav_dk@lkouniv.ac.in

शोध सारांश:

प्रस्तुत शोध पत्र माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति शोध अध्ययन पर आधारित है। इसके अतिरिक्त जेंडर तथा विषय वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है, जो वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इस अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में लखनऊ जनपद के माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 में शिक्षण कर रहे 100 शिक्षकों (50 महिला शिक्षक तथा 50 परुष शिक्षक) का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श प्रविधि द्वारा किया गया है। शोध संबंधित आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए शोधकर्ता द्वारा पांच बिंदु लिकर्ट मापनी पर आधारित स्वनिर्मित की ई-अधिगम अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया है। इस मापनी में ई-अधिगम की उपयोगिता तथा औचित्य को ध्यान में रखते हुए कुल 35 कथनों (26 धनात्मक तथा 9 ऋणात्मक) को सम्मिलित किया गया है। इस मापनी द्वारा संकलित आंकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधकर्ता द्वारा सांख्यिकीय प्रविधियों के अंतर्गत माध्य, मानक विचलन तथा t-परीक्षण का उपयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात शोध निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की है। साथ ही जेंडर तथा विषय वर्ग के आधार पर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

मुख्य शब्द: *ई-अधिगम, अभिवृत्ति, माध्यमिक स्तर, कला एवं विज्ञान वर्ग।*

1. INTRODUCTION:

शिक्षा के संदर्भ में तकनीकी प्रगति ने शिक्षण और अधिगम प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए हैं। ई-अधिगम इन परिवर्तनों का एक महत्वपूर्ण एवं सजग अंग है, जिसके माध्यम से परंपरागत शिक्षण विधियों को सार्थक एवं नई प्रगतिशील दिशा मिली है। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए ई-अधिगम एक ऐसा संसाधन है, जो न केवल शिक्षण को अधिक आकर्षक, सार्थक, प्रभावी और रोचक बनाता है, बल्कि छात्रों के लिए भी सीखने के लिए सदैव नए-नए अवसर प्रदान करता है। माध्यमिक शिक्षा वह महत्वपूर्ण स्तर है, जिसके माध्यम से छात्रों की शैक्षिक नींव मजबूत होती है और छात्रों की शैक्षिक दिशा निर्धारित होती है। इस स्तर पर शिक्षकों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, जो कि छात्रों के लिए मार्गदर्शन के रूप में कार्य करते हैं। ई-अधिगम के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति न केवल उनकी स्वयं की पेशेवर दक्षता को प्रभावित करती है, बल्कि छात्रों के सीखने के

अवसरों, अनुभव और परिणाम पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। यह अध्ययन शिक्षकों के अनुभव चुनौतियों, सुचारु प्रयासों, लाभों और तकनीकियों में समर्थता, संलग्नता को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

ई-अधिगम:

ई-अधिगम को इलेक्ट्रानिक अधिगम या ऑनलाइन अधिगम के रूप में भी जाना जाता है, जो डिजिटल तकनीकियों, इंटरनेट और मल्टीमीडिया संसाधनों का उपयोग करके ज्ञान एवं शिक्षा के प्रसार की आधुनिक विधि है। यह परंपरागत शिक्षण पद्धति का एक डिजिटल विस्तार है, जिसके माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को अधिक सुलभ, लोचशील और प्रभावी बनाया जा सकता है। नवाचार एवं आधुनिकता के इस दौर में जब तकनीकी क्रांति ने संचार और सूचना के सभी संभावित क्षेत्रों में अपने प्रभाव को दिखाया है। परस्पर शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। ई-अधिगम शिक्षा के क्षेत्र में एक नया प्रत्यय है। ई-अधिगम की सहायता से डिजिटल, इलेक्ट्रानिक एवं इंटरनेट की तकनीकियों को प्रयोग में लाते हुए शिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण एवं संचार को प्रशस्त किया जाता है। ई-अधिगम की सहायता से अधिगम के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक और विद्यार्थी उचित रूप से अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित हो सकें। ई-अधिगम ने शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ-साथ शिक्षार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है, जिसके अंतर्गत शिक्षार्थी अपने समय, स्थान और सुविधानुसार शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा शिक्षक अपने सुविधानुसार शिक्षण कार्य को संचालित कर सकते हैं। ई-अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया को प्रोन्नत करता है, जिसके फलस्वरूप समयानुकूल प्रक्रिया का अनवरत प्रवाह चलता रहे और ई-अधिगम की सारगर्भिता बेहतर रूप से तय की जा सकें। ई-अधिगम प्रक्रिया में इण्टरनेट, डिजिटल प्लेटफॉर्मों के उपयोग से अधिगम प्रक्रिया एवं वातावरण में विस्तार किया जाता है। ई-अधिगम शिक्षा के क्षेत्र में एक वैकल्पिक प्रणाली नही है, बल्कि यह शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन प्रत्यय एवं समयानुरूप उपयोगिताओं के सन्दर्भ में अपनी विशेषताओं को तारतम्य करते हुए विकसित हुई है। ई-अधिगम प्रणाली शिक्षा के क्षेत्र में नवीनता के भाव को संदर्भित करते हुए अपने लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को सुनिश्चित करती है।

शोध का औचित्य :

अधिगम के प्रति शिक्षकों की सार्थक एवं सकारात्मक अभिवृत्ति का होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षकों को निरंतर समयानुकूल शिक्षण में सुधार हेतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य के उजागर तत्वों को जानना एवं समझना अतिआवश्यक है। वर्तमान शिक्षक प्रणाली के अंतर्गत ई-अधिगम एक सर्वमान्य,सर्वव्यापी एवं संदर्भित तथ्य के रूप में उजागर हुआ है। कोविड-19 महामारी के पश्चात् ई-अधिगम ने शिक्षण एवं शिक्षकों पर अत्यधिक प्रभाव डाला है तथा शैक्षिक क्रियाकलापों को एक नए दृष्टि पटल पर लाकर रख दिया है तथा शिक्षकों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एवं भविष्य के लिए तैयारी हेतु ई-अधिगम के समस्त आयामों को जानना समझना अति आवश्यक है। ई-अधिगम के प्रभावी स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति में सजगता बढ़ी है। प्रस्तुत शोध विषय पर अनेक अध्ययन हुए हैं, परंतु माध्यमिक स्तर पर ई-अधिगम के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति से संबंधित पर्याप्त शोध कार्य नहीं हुए हैं तथा यह सुनिश्चित नहीं हुआ है, कि वर्तमान में माध्यमिक स्तर के शिक्षक ई-अधिगम के प्रति कितना गंभीर हैं, तथा भविष्य में ई-अधिगम द्वारा शिक्षक किस प्रकार प्रभावित होंगे एवं अधिगम के प्रति माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की क्या अभिवृत्ति व दृष्टिकोण रहेगा, तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षक कितने मनोयोग एवं संलग्नता के साथ ई-अधिगम को शिक्षण में अपनाएंगे। संदर्भित कारणों को दृष्टिगत रखते हुए ई-अधिगम की अभिवृत्ति के प्रति शोध कार्य करने की आवश्यकता महसूस हुई। जिसके माध्यम से माध्यमिक स्तर पर ई-अधिगम के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया जा सकेगा।

समस्या कथन: "माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति"

शोध उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का जेंडर के आधार पर ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का विषय-वर्ग के आधार पर ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

3. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का ई-अधिगम के प्रति उच्च एवं निम्न अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

1. महिला एवं पुरुष शिक्षकों के अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांको में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांको में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

पारिभाषिक शब्दावली:

माध्यमिक स्तर- माध्यमिक स्तर से तात्पर्य है, कि शिक्षा व्यवस्था का वह प्रतिरूप जो प्राथमिक शिक्षा संरचना एवं उच्च शिक्षा संरचना के मध्य ब्रिज की भांति कार्यरत रहती है और अपनी मौलिकता के साथ शिक्षा को गति प्रदान करती है। माध्यमिक स्तर में मुख्य रूप से 9 एवं 10 की कक्षाएं सम्मिलित होती हैं।

शिक्षक- प्रस्तुत शोध में शिक्षक से तात्पर्य माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 में पढ़ाने वाले शिक्षकों से है।

ई-अधिगम- ई-अधिगम को इलेक्ट्रॉनिक अधिगम और ऑनलाइन अधिगम के रूप में भी जाना जाता है। ई-अधिगम की सहायता से इलेक्ट्रॉनिक एवं इंटरनेट की तकनीकियों को प्रयोग में लाते हुए शिक्षण प्रक्रिया के अंतर्गत पाठ्यवस्तुओं के प्रस्तुतीकरण एवं संचार प्रक्रिया को प्रशस्त किया जाता है।

अभिवृत्ति- अभिवृत्ति वास्तव में एक मनो-सामाजिक प्रत्यय है, जो विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के द्वारा किए जाने वाले व्यवहार की प्रवृत्ति को दर्शाती है। अभिवृत्ति व्यक्ति की मनोभाव अथवा विश्वासों को परिलक्षित करती हैं। अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व की वह प्रवृत्तियां हैं, जो किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के संदर्भ में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिए तत्परता दिखाती हैं।

शोध विधि:

प्रस्तुत शोध की प्रकृति वर्णनात्मक है, जिसके अंतर्गत सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या:

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में लखनऊ जनपद के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन प्रविधि:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में लखनऊ जनपद के माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 में शिक्षण कार्य रहे 100 शिक्षकों (50 महिला शिक्षक तथा 50 पुरुष शिक्षक) का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन प्रविधि द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने ई-अधिगम की अभिवृत्ति शोध संबंधित मात्रात्मक आंकड़ों को संकलित करने के लिए पाँच बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित 35 कथनों (26 धनात्मक तथा 9 ऋणात्मक) को सम्मिलित किया गया है। 'ई-अधिगम अभिवृत्ति मापनी' में 6 आयामों को दृष्टिगत रखते हुए कथनों का निर्माण किया गया है, जो शैक्षणिक संलग्नता, तकनीकी कुशलता/ दक्षता, Ease of use / Percieved usefulness, ई-विषयवस्तु, सहयोग एवं संचार तथा ई-अधिगम अनुभव हैं।

आंकड़ों का संकलन :

सर्वप्रथम लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष से आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए अनुमति प्राप्त की गई। तथा लखनऊ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों से संपर्क स्थापित किया गया और उन्हें संपूर्ण शोधकार्य की जानकारी देकर उनसे विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों से आंकड़ों व सूचनाओं को एकत्रित करने के लिए आग्रह किया गया। तत्पश्चात शिक्षकों से व्यक्तिगत रूप से

संपर्क स्थापित किया गया। शिक्षकों को उपकरण से संबंधित दिशा-निर्देशों के बारे में बताया गया और यह आश्वासन दिया गया कि उनकी अनुक्रियाएं पूर्णता गुप्त रखी जाएगी। उपकरण पूर्ण रूप से भर देने के बाद उन्हें धन्यवाद देकर उपकरण को संकलित कर लिया गया।

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियां:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समस्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधकर्ता द्वारा सांख्यिकी प्रविधियों के अंतर्गत माध्य, मानक विचलन तथा t-परीक्षण का उपयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या:

शोध उद्देश्य-1 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का जेंडर के आधार पर ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

H_{01}: महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांको में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध अध्ययन के प्रथम उद्देश्य "माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का जेंडर के आधार पर ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना" के लिए माध्यमिक स्तर के शिक्षकों से प्राप्त आंकड़ों को जेंडर (पुरुष तथा महिला) के आधार पर व्यवस्थित करके सर्वप्रथम स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जांच की गई। इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी सभी अभिधारणाओं के संतुष्ट हो जाने के बाद स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का वितरण तालिका संख्या 1 में प्रस्तुत किया गया है।

महिला एवं पुरुष शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का माध्य, मानक विचलन, t-मान, एवं p- मान हेतु तालिका

जेंडर	N	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रांश (df)	t- मान	p-मान
पुरुष	50	136.24	9.78	98	0.104	0.917
महिला	50	136.20	11.23			

तालिका संख्या 1 ***सार्थकता स्तर 0.05**

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ई-अधिगम के प्रति पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति का माध्य 136.24 तथा मानक विचलन 9.78 है, इसी प्रकार महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति का माध्य 136.20 तथा मानक विचलन 11.23 है। दोनों समूहों के मध्य मात्र 0.04अंकों का अंतर परिलक्षित होता है, जो तुलनात्मक रूप से नगण्य है। ई- अधिगम के प्रति महिला तथा पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति का परिकलित स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान 0.104 है, जिसका स्वतंत्र्यांश 98 पर p-मान 0.917 है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है, इसलिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांको में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा, निरस्त नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर महिला तथा पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांको में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों का जेंडर (महिला तथा पुरुष) ई-अधिगम के प्रति उनकी अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करता है। शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति लगभग समान है, जिससे यह परिलक्षित होता है कि ई-अधिगम की मूल अवधारणाओं, उद्देश्यों एवं क्रियान्वयन प्रक्रिया के प्रति शिक्षकों की समझ और अभिप्रेरणा लैंगिक पक्षपात से मुक्त है।

इस उद्देश्य से संबंधित आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि माध्यमिक स्तर के पुरुष तथा महिला शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति एक समान है। पूर्ववर्ती शोध परिणाम हमारे शोध परिणाम से भिन्न है इसके संभावित कारण यह हो सकते हैं कि महिला शिक्षक एवं पुरुष शिक्षक समान रूप से अधिगम के प्रति जागरूक हैं। महिला एवं पुरुष शिक्षक समान रूप से अपने शिक्षण कार्य को ई-अधिगम विधियों के माध्यम से संपूर्ण करने के प्रति समर्थता रखते हैं। ई-अधिगम विधियों और नवीन शिक्षण तकनीकियों के प्रति शिक्षकों में सकारात्मक अभिवृत्ति है।

शोध उद्देश्य– 2 : माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का विषय-वर्ग के आधार पर ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

H_{01}: कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांको में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध अध्ययन के द्वितीय उद्देश्य "माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का विषय-वर्ग के आधार पर ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना" के लिए माध्यमिक स्तर के शिक्षकों से प्राप्त आँकड़ों को उनके विषय-वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर व्यवस्थित करके सर्वप्रथम स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जाँच की गई। इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी सभी अभिधारणाओं के संतुष्ट हो जाने के बाद स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का वितरण तालिका संख्या 4.2 में प्रस्तुत किया गया है।

कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का माध्य, मानक विचलन, t-मान, p- मान हेतु तालिका

विषय वर्ग	N	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रांश (df)	t- मान	p- मान
कला	50	136.78	8.01	98	0.618	0.538
विज्ञान	50	135.48	12.58			

तालिका संख्या 2 ***सार्थकता स्तर 0.05**

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कला वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति का माध्य 136.78 तथा मानक विचलन 8.01 है, जबकि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति का माध्य 135.48 तथा मानक विचलन 12.58 है। दोनों समूहों के मध्य मात्र 1.30 अंकों का अंतर परिलक्षित होता है, जो तुलनात्मक रूप से नगण्य है।

ई-अधिगम के प्रति कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति का परिकलित स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान 0.618 है, जिसका स्वतंत्र्यांश 98 पर p-मान 0.538 है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है, इसलिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा, निरस्त नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि विषय-वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति समान है। यह परिलक्षित होता है कि शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति समझ, दृष्टिकोण और अभिप्रेरणा उनके विषय-वर्ग पर निर्भर नहीं है, और वे समान रूप से ई-अधिगम की मूल अवधारणाओं से प्रभावित हैं। इस उद्देश्य से संबंधित आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति एक समान है। पूर्ववर्ती शोध परिणाम हमारे शोध परिणाम से भिन्न है इसके संभावित कारण निम्नवत हो सकते हैं- ई-अधिगम के उद्देश्यों, सिद्धांतों और क्रियान्वयन के प्रति उनके विचार निष्पक्ष और विषय-स्वतंत्र हैं। कला एवं विज्ञान विषय वर्ग के शिक्षक समान रूप से ई-अधिगम के प्रति जागरूक हैं। शिक्षक समान रूप से अपने शिक्षण कार्यों में ई-अधिगम विधियों का उपयोग करते हैं। कला एवं विज्ञान विषय वर्ग के शिक्षक अपने शिक्षण कार्यों में नवीनता एवं नवाचारी भाव का समावेशन रखते हैं।

शोध उद्देश्य– 3 : माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का ई-अधिगम के प्रति उच्च एवं निम्न अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति स्तर हेतु तालिका

स्तर	बारंबारता	प्रतिशत
उच्च स्तर	14	14 %
औसत स्तर	73	73 %
निम्न स्तर	13	13 %

तालिका संख्या 3

प्रस्तुत सारणी के अध्ययन से यह दृष्टिगत है कि माध्यमिक स्तर के14% शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति उच्च स्तर की है, और 73% औसत स्तरीय अभिवृत्ति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में है। और 13% शिक्षकों में ई- अधिगम के प्रति अभिवृत्ति निम्न स्तर की है। प्रस्तुत शोध परिणाम में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में ई-अधिगम के प्रति औसत स्तर की अभिवृत्ति है। इस शोध परिणाम की पुष्टि अलसमारी (2022) के शोध परिणाम से होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में ई-अधिगम के प्रति औसत स्तर की अभिवृत्ति है।

शोध निष्कर्ष:

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में जेंडर के आधार पर ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। महिला एवं पुरुष शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति एक समान है। जिसका संभावित कारण यह हो सकता है कि ई-अधिगम की मूल अवधारणाओं, उद्देश्यों एवं क्रियान्वयन प्रक्रिया के प्रति शिक्षकों की समझ और अभिप्रेरणा लैंगिक पक्षपात से मुक्त है। महिला एवं पुरुष शिक्षक समान रूप से अपने शिक्षण कार्य को ई-अधिगम विधियों के माध्यम से संपूर्ण करने के प्रति समर्थता रखते हैं। ई-अधिगम विधियों और नवीन शिक्षण तकनीकियों के प्रति शिक्षकों में सकारात्मक अभिवृत्ति है।

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में विषय वर्ग के आधार पर ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कला एवं विज्ञान विषय वर्ग के शिक्षकों में ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति एक समान है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि ई-अधिगम के उद्देश्यों, सिद्धांतों और क्रियान्वयन के प्रति उनके विचार निष्पक्ष और विषय-स्वतंत्र हैं। कला एवं विज्ञान विषय वर्ग के शिक्षक समान रूप से ई-अधिगम के प्रति जागरूक हैं। शिक्षक समान रूप से अपने शिक्षण कार्यों में ई-अधिगम विधियों का उपयोग करते हैं।

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में ई-अधिगम के प्रति औसत स्तर की अभिवृत्ति है। जिसका संभावित कारण यह हो सकता है कि माध्यमिक स्तर के शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में ई-अधिगम विधियों का सार्थकता के साथ प्रयोग कर रहे हैं। तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षक ई-अधिगम से संबंधित शिक्षण तत्वों को समझते हैं। समयानुकूल शिक्षण की समझ तथा ई-अधिगम संसाधनों, प्लेटफार्मों की सार्थक उपयोगिता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ:

ई-अधिगम के प्रति शिक्षकों और विद्यार्थियों की अभिवृत्ति मात्र एक मनो वैज्ञानिक प्रतिक्रिया नहीं बल्कि शिक्षण प्रक्रिया के भावी भविष्य को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण संकेतक है। शिक्षकों को भावी भविष्य का निर्माता कहा जाता है अर्थात शिक्षक आने वाली पीढियों को शैक्षिक प्रकार्यों से लाभान्वित करके विकसित भविष्य का उत्पादक सदस्य बनने में सहयोग देते हैं। शिक्षकों को ई-अधिगम के प्रति सकारात्मक और सार्थक अभिवृत्ति विकसित करने के लिए समय-समय पर ई-अधिगम शिक्षण-प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, कार्यक्रमों और अधिगम संबंधी ई-संसाधनों से रूबरू होते रहना चाहिए। जिसके फलस्वरुप शिक्षक, शिक्षण कार्यों में नवीनता एवं नवाचार का समावेशन कर सकें। शिक्षकों की तकनीकी कुशलता और ई-ससाधनों ई-अधिगम, उपकरणों के प्रति सकारात्मक ज्ञान एवं उपयोगिता उनकी अभिवृत्ति को प्रभावित करती है। अतः शिक्षण- प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता, ई-पाठ, ऑनलाइन मूल्यांकन विधियों, ई-अधिगम विधियों एवं ई- संसाधनों की व्यवहारिक उपयोगिता को सम्मिलित किया जाना चाहिए। ई-अधिगम की सहायता से अधिगम को और अधिक लचीला स्व-नियंत्रित और रुचिकर बनाने के हर संभव सार्थक प्रयास किया जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया से शत-प्रतिशत जुड़ सके और उनमें सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित हो सके। कोविड-19 महामारी के संकट के कारण परंपरागत शिक्षण व्यवस्था के अंतर्गत कक्षाओं और ई-अधिगम प्रक्रिया का संचालन संभव नहीं होने से विद्यार्थियों की पढ़ाई स्थगित सी हो चली थी। तत्पश्चात केंद्र व राज्य सरकारों के सार्थक प्रयास से ई-अधिगम की अवधारणा के फलस्वरूप अनेक प्लेटफार्म, एप्स एवं ई-विषयवस्तु के माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुचारू रूप से तारतम्य करते हुए विद्यार्थियों तक पहुंच सुनिश्चित की गई और प्रयास किया गया कि विद्यार्थियों में ई-अधिगम

के प्रति सकारात्मक और सार्थक अभिवृत्ति विकसित हो सके। ई -अधिगम प्लेटफार्म की सहायता से विद्यार्थियों के लिए अधिगम हेतु वीडियो, ऑडियो नोट्स,पोस्टर, ई-पाठ्यचर्या आदि अधिगम सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है, जिसके फलस्वरूप विद्यार्थी अपनी स्वगति से अधिगम प्रक्रिया में संलग्न हो सकें। विद्यार्थी किसी भी स्थान से किसी भी समय भौतिक कारकों से परे अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित हो सकते है और ई-अधिगम विधियों के उपयोग से विद्यार्थियों में ई-अधिगम, तकनीकी, कुशलता, डिजिटल साक्षरता आदि की समझ विकसित हो सकेगी और साथ ही विद्यार्थियों का समग्र विकास और उनमें सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित हो सकेगी। ई-अधिगम शैक्षिक क्रियाकलापों में आधुनिकता का समावेशन करता है, अर्थात शिक्षण स्वरूपों को ई-संसाधनों, तकनीकियों की सहायता से और अधिक रुचिकर एवं प्रभावशाली बनाता है। पाठ्यक्रमों में तकनीकी-समर्थ सामग्रियों का समावेशन करते हुए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। जिससे उनमें तकनीकी कुशलता रचनात्मक, डिजिटल साक्षरता जैसे गुण विकसित हो ऐसे क्रियाकलापों को पाठ्यक्रमों का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। ई-अधिगम को शैक्षिक नीतियों और कार्यकारी संस्थाओं का प्रोत्साहन मिला है जिसके फलस्वरुप डिजिटल साक्षरता, ऑनलाइन शिक्षा नीति, ई-संसाधनों, ई-जर्नल्स, ई-लेख जैसे नवाचारी स्वरूपों को समृद्ध करने के हर संभव प्रयास को सराहा जा रहा है। जिससे जमीनी स्तर पर समस्त लोग ई-अधिगम से जुड़कर इनका संपूर्ण लाभ उठा सकें और उनमें एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके। ई-अधिगम को और सशक्त एवं प्रभावी बनाने हेतु शिक्षण सहयोगी तंत्र को विकसित करना चाहिए जो समय-समय पर ई-अधिगम संबंधी तथ्यों और ई कार्य प्रणालियों का मूल्यांकन करें तथा उनके परिणामों की व्याख्या करें जिसके फल स्वरुप शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अन्य संबंधित सदस्यों में सकारात्मक एवं सार्थक अभिवृत्ति का प्रादुर्भाव हो सके।

REFERENCES

[1] अलसमारी, एम. ए. (2022). द एटीट्यूड ऑफ पब्लिक स्कूल टीचर्स टुवर्ड्स ई-लर्निंग इन साऊदी अरेबिया। *अ वर्ल्ड इंग्लिश जर्नल*, *2*(2), 245-257. https://dx.doi.org/10.24093/awej/covid2.16

[2] Chahal, J., Adan, F. G., Gupta, P., & Goswami, M. (2022). भारत में उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच ई-लर्निंग की स्वीकृति का अन्वेषण: बाह्य चरों के साथ प्रौद्योगिकी स्वीकृति मॉडल का संयोजन, *Journal of Computer in Higher Education*, *34*(3), 844-867. https://doi.org/10.1007/s12528-022-09327-0

[3] छाबड़ा, आर., एवं शर्मा, आर. (2024). उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ई-लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृति का अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स*, *12*(11), f644-f648.

[4] हीरेमठ, एम. (2024). ए स्टडी ऑन एटीट्यूड ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स टुवर्ड्स ई-टीचिंग एंड ई-लर्निंग। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स*, *12*(2320-2882), e818-e821. https://www.ijcrt.org/

[5] कासीनाथन, ओ., एवं मैथ्यु, जे. (2023). एटीट्यूड का आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज टीचर्स टुवर्ड्स ई-लर्निंग। द *ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ डिस्टेंस एजुकेशन एण्ड ई-लर्निंग*, *11*(4), 3024-3029.

[6] लालसांगपुई, एट आल. (2023). एटीट्यूड टुवर्ड्स ई-लर्निंग एमंग डी.एल.एड स्टूडेंट्स इन आइजोल सिटी। *इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च ट्रेंड्स एंड इनोवेशन*, *8*(4), 99-102.

[7] मेहता, ए., एवं दीक्षा (2022). एटीट्यूड ऑफ एडोलिसेंट स्टूडेंट टुवर्ड्स ई-लर्निंग। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स*, *10*(2320-2882), 9303-9311. https://www.ijcrt.org/

[8] नसरीन (Nasreen), एस., एवं मोहम्मद (Mohammad), एस. (2024) Nasreen, S., & Mohammad, S. (2024). शिक्षक शिक्षकों का शिक्षण-अधिगम में ICT एकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन. *International Educational Research Journal (IERJ)*, *10*(3), 25-30. https://ierj.in/journal/index.php/ierj/article/view/3289

[9] Pratap, S., Dahiya, A., Rawat, S., & Kumar, J. (2023). भारत में ऑनलाइन शिक्षा: चुनौतियाँ और अवसर In A. Chakrabarti & V. Singh (Eds.), *Design in the Era of Industry 4.0, Volume 1* (pp. 727-738). Springer. https://doi.org/10.1007/978-981-99-0293-4_59

[10] Vanitha, P. S., & Alathur, S. (2021). Factors influencing e-learning adoption in India: Learners' perspective. *Education and Information Technologies*, *26*, 5199-5236. https://doi.org/10.1007/s10639-021-10504-4

[11] Yadav, N., Sinha, B., & Bhatt, V. (2021). Impact of COVID-19 on students' perception of e-learning concerning online value-added courses. *Shodh Sarita*, *8*(29), 135-140.

Cite this Article:

अभिषेक शर्मा एवं डॉ. देवेंद्र कुमार यादव, "माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की ई-अधिगम के प्रति अभिवृत्ति", *Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), ISSN: 3048-9423 (Online), Volume 1, Issue4, pp. 169-176, February-March 2025.*

Journal URL: https://nijms.com/
DOI: https://doi.org/10.71126/nijms.v1i4.47

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.